हिन्दी भाषा में त्रुटियाँ

Dr Aruna Chopra
Aarohi Model Senior Secondary School, Sirsa.

Received: May 13 , 2018 Accepted: June 27, 2018

ABSTRACT *आठवीं कक्षा के सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्रों द्वारा हिन्दी भाषा में की गई त्रुटियों में महत्वपूर्ण अन्तर नही है, इस परिकल्पना का परिक्षण द्वितीय भाग में किया गया है। अनुसंधानकर्त्री द्वारा यह सम्भावना की गई थी कि आठवीं कक्षा के सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालयों की आठवीं कक्षा के छात्रों द्वारा विभिन्न प्रकार की त्रुटियों में कोई अन्तर नही है। इस परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए 'टी–टैस्ट' का प्रयोग किया गया है।*

Keywords:

1.1 प्रस्तावना –

भाषा मनुष्य की चिरसंगिनी हैं। भाषा का आश्रय लेकर ही मानव सभ्यता का एवं संस्कृति पल्लवित एवं पुष्पित हुई हैं। मानव अपने अन्तस्थ भावों को अभिव्यक्त करने के लिऐ भाषा पर निर्भर हैं। वह मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति माध्यम से न केवल अपने परिवेश से सम्पर्क स्थापित कर पाता है,अपितू अपने भीतर छिपी अनन्त प्रतिभा को भी सहज ही प्रकट कर पाता है। पाश्चात्य दार्शनिक **एल. रान. हब्बर्ड** के अनुसार एक व्यक्ति उतना ही सफल एवं सजीव हैं जितना वह अभिव्यक्ति सक्षम है। ऐसे में भाषा ज्ञान को समृद्ध करने की अनिवार्यता और भी बढ़ जाती है, जब भूमण्डलीकरण के युग में सूचना क्रान्ति घटित हो जाती है तथा ज्ञान का विस्फोट अपेक्षाओं में वृद्धि कर रहा होता है। यह सत्य है कि भारत एक बहु भाषी देश है, किन्तु इस देश में ऐसे में बहुत बडा वर्ग उन लोगों का है जिनकी मात्र भाषा हिन्दी है। वे इसे अपने दैनिक जीवन में बोलते, पढ़ते, व लिखते है। हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा की पदवी प्राप्त हुऐ दशकों बीत गये हैं। किन्तु जिस स्तर पर जन–जन के साथ जोड़ने की अभिलाषा भारतीय मनीषी एवं साहित्य प्रेमी मन में संजोये हुऐ थें; उसे पूर्ण करने के लिऐ लबीं यात्रा तय करने की आवश्यकता होगी आज जब भारत में हिन्दी जैसी वैज्ञानिक एवं अत्यंत सुंदर भाषा के होते हुऐ भी एक विदेशी भाषा का प्रसार–क्षेत्र बढ़ रहा है तो हिन्दी भाषा को इसके सिंहासन पर आसीन करवाने के लिऐ सजग प्रयास अपेक्षित है। इसके लिऐ भाषा–शिक्षकों को अपनी भूमिका की पहचान करना परमावश्यक है। वे अपना स्वमूल्यांकन करें कि अपने विद्यार्थियों कों हिन्दी भाषा के स्वरुप का दिग्दर्शन कराने में वे कितने समर्थ सक्षम है। समाज में रहते हुऐ उसे एक दूसरे के साथ विचार विनिमय करना होता है; अपनी आवश्यकताएं बतानी होती है और अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए दूसरे को सहायता करनी होती है। अपनी बात समझानें और दूसरों की बात समझने के लिए किसी ऐसे साधन की आवश्यकता होती है। जिसका सभी सहजता और सरलता से प्रयोग कर सकते है। यह साधन 'भाषा' के द्वारा प्रदान किया जाता है। भाषा के उद्गम और विकास में अनगिनत वर्ष लगे हैं। इससे पहले मनुष्य अपनी बातें समझाने के लिए 'संकेतों' का प्रयोग करते थे।

1.2 शुद्ध वर्तनी का महत्व–

हिन्दी भाषा की शिक्षा में वर्तनी अर्थात अक्षर–विन्यास का अत्यधिक महत्व है शुद्ध वर्तनी पर बहुत कुछ निर्भर करता है। मौखिक भाषा के लिये उच्चारण शुद्धता आवश्यक है। लिखित भाषा को सार्थक, प्रभावशाली एवं शुद्ध बनाऐ रखने के लिऐ शुद्ध अक्षर–विन्यास आवश्यक है अशुद्ध अक्षर–विन्यास अभिव्यक्ति अर्थ एवं भाव को ही बदल देता है। अशुद्ध वर्तनी केवल लिखित अभिव्यक्ति को ही प्रभावहीन नहीं बनाती अपितू मौखिक अभिव्यक्ति को भी प्रभावित करती है। अशुद्ध वर्तनी से उच्चारण अशुद्ध होता है और भाषा भी क्षीण होती है। लेखन में शुद्ध वर्तनी का बहुत महत्व है। वर्तनी की शिक्षा प्राथमिक स्तर से ही प्रारम्भ कर दी जाती है। उच्चारण की शिक्षा के साथ–साथ वर्तनी की शिक्षा भी दी जाऐ तो इससे ध्वनियों के मौखिक तथा लिखित रुप पर बच्चों का पूर्ण अधिकार हो जायेगा और उनकी अभिव्यक्ति सश्क्त एवं प्रभावशाली बन सकेगी। वर्तनी की शुद्धता भाषा का अनिवार्य अंग है। अभिव्यक्ति के विचारों की क्रमिकता एवं सुसम्बधता कितनी ही सुव्यवस्थित क्यों न हो परन्तु यदि विचारों को व्यक्त करने वाली भाषा शुद्ध नहीं तो उसका प्रभाव नगण्य बनकर रह जायेगा। भाषा की शुद्धता मुख्यतः शुद्ध वर्तनी पर निर्भर करती है।

वर्तनी केवल लिखित अभिव्यक्ति को ही प्रभावित नहीं करता। अपितु मौखिक अभिव्यक्ति को भी प्रभावित करता है, क्योंकि अशुद्ध वर्तनी से हमारा उच्चारण भी अशुद्ध हो जाता है। अशुद्ध लिखना जहां उच्चारण को अशुद्ध बना देता है। वहां उसके अर्थ में भी परिवर्तन कर देता है। भाषा को शक्तिशाली एवं प्रभावशाली बनाने के लिए वर्तनीगत शुद्धता अंत्यत आवश्यक है। वर्तनीगत शुद्धता के बिना भारत की शक्ति अपना महत्व खो बैठती हैं। प्रायः देखा गया है कि विद्यार्थी वर्तनीगत शुद्धता कि और विशेष ध्यान नहीं देते। वह किसी प्रकार से अपनी बात दूसरे को समझा देने मात्र से ही संतुष्ट हो जाते है। यह संतुष्टि उनकी लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति के लिए कितनी हानिकारक है। इस तथ्य के प्रति वे जागरूक नहीं है। भाषा–शिक्षक को उन्हें इस तथ्य के प्रति सचेत करने की आवश्यकता है।

1.3 वर्तनीगत अशुद्धियों के प्रकार–

1. मात्राओं की अशुद्धियाँ।
2. संयुक्त अक्षरों की अशुद्धियाँ।
3. रेफ की अशुद्धियाँ।
4. अनुनासिक की अशुद्धियाँ ।
5. चन्द्रबिन्दु एवं अनुस्वार की अशुद्धियाँ ।
6. अल्पप्राण और महाप्राण की अशुद्धियाँ।
7. स्वर–भक्ति की अशुद्धियाँ ।
8. स्वर–लोप की अशुद्धियाँ ।
9. वर्ण–लोप की अशुद्धियाँ ।
10. स्वरागम की अशुद्धियाँ ।
11. विसर्ग संबंधी अशुद्धियाँ ।
12. विरामचिन्ह की अशुद्धियाँ ।
13. शिरोरेखा की अशुद्धियाँ ।
14. 'न' और 'ण' की अशुद्धियाँ ।
15. 'क्ष' और 'छ' की अशुद्धियाँ ।

1.4 प्रस्तुत अध्ययन में चयनित अशुद्धियों का वितरण–

1) मात्राओं की अशुद्धियाँ–

हिन्दी भा ा में शब्दों में ह्रस्व एवं दीर्घ दों प्रकार की अशुद्धियाँ होती है यदि छात्र इन मात्राओं को उनके निश्चित स्थान पर नही लगाते तो मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ हो जाती है मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ निम्न प्रकार की पाई जाती है:–

1. ह्रस्व एवं दीर्घ मात्राओं का अशुद्ध प्रयोग–

अशुद्ध – शुद्ध

परन्तू – परन्तु
भक्ती – भक्ति
कूरूप – कुरूप

2. आवश्यक मात्राऐं लगाना–

अशुद्ध शुद्ध

प्रदर्शिनी – प्रदर्शनी

3. मात्राओं का लोप–

अशुद्ध शुद्ध

मालिन – मालन
बहन – बहिन

2) अनुस्वार और अनुनासिक संबंधी अशुद्धियाँ

हिन्दी भा ा में बहुत बार यह देखा गया है कि छात्र अनुस्वार और अनुनासिक जैसे चिह्नों में अक्सर त्रुटियाँ कर देते हैं। वे जहां अनुस्वार का प्रयोग करना होता है वहां अनुनासिक का प्रयोग कर देते है। और इसी तरह जहां अनुनासिक का प्रयोग करना होता है। वहां अनुस्वार का प्रयोग कर देते है। जिससे शब्दों में त्रुटि आ जाती है। जैसे–

अशुद्ध शुद्ध

सम्बन्ध – संबंध
लम्बा – लंबा

3) विराम चिन्ह संबंधी अशुद्धियाँ

जिन शब्दों के साथ में विराम चिन्ह न लगाया जाये तो वहां प्राय वाक्य के अर्थ में परिवर्तन हो जाता है। जैसे–

अशुद्ध – रोको मत जाने दो
शुद्ध – रोको, मत जाने दो।
अशुद्ध – वह दिल्ली मथुरा और शिमला जायेगा
शुद्ध – वह दिल्ली, मथुरा और शिमला जायेगा।

4) शिरोरेखा संबंधी अशुद्धियाँ–

हिन्दी में 'भ' और 'म' का अन्तर शिरोरेखा द्वारा माना जाता है बालकों द्वारा किण्चित भी आसावधानी से 'भ' के स्थान पर 'म' और 'म' के स्थान पर 'भ' पढा जाता है जैसै–

अशुद्ध – मूख, **अशुद्ध** – मेड़
शुद्ध– भूख, **शुद्ध** – भेड़

5) रेफ संबंधी अशुद्धियाँ–

बहुधा ऐसा देखा गया है कि कोई भी छात्र रेफ में अंतर नहीं समझते पंजाबी लोगों में यह गलती अधिक पाई जाती है। वहां पर धर्म को धरम तथा कर्म को करम कहा जाता है। यदि शब्द की ध्वनि पर ध्यान दिया जाये तो गलती या त्रुटि दूर हो सकती हैं।

रेफ का प्रयोग जिस अक्षर के साथ होता है। वह उसके ऊपर चढ़ जाता है।

जैसे–

मर्म, कर्म, नर्म

कहीं–कहीं पर रेफ का प्रयोग अक्षर के नीचे भी होता है।

जैसे–

चक्र,वक्र, क्रय,राष्ट्र आदि

6) चन्द्रबिन्दू संबंधी अशुद्धियाँ –

कई बार छात्र चन्द्रबिन्दू को ाब्दों के साथ सही शब्द के साथ लगाने की बजाय उसे अन्य के साथ प्रयोग करते है जिससे शब्दों में गलती हो जाती है।

जैसे–

अशुद्ध शुद्ध

रँग – रंग

7) वाक्य संबंधी अशुद्धियाँ –

कई बार वाक्यों में शब्दों को उलट–फेर करके लिखने से वाक्यों के अर्थ में ही परिवर्तन हो जाता है। जिससे वाक्यों संबंधी अशुद्धियाँ हो जाती है।

जैसे–

खरगोश को काटकर गाजर खिलाओ ।
सीता गाना गाता है।

1.5 वर्तनीगत अशुद्धियों के कारण–

1) लिपि का अपूर्ण ज्ञान – हिन्दी भा ा को लिखते समय अधिकांश छात्र इसीलिऐ त्रुटिपूर्ण अक्षर लिखतें हैं।क्योंकि उनहे अपनी देवनागरी लिपि का पूर्ण ज्ञान नहीं होता है। वे विशे ा रूप से 'ड' तथा 'ड़' में अंतर नहीं समझते हैं और उनका मनमाना प्रयोग करते हैं। इन शब्दों के सही प्रयोग का उन्हें पूरा ज्ञान नहीं होता हैं ।

इसीलिऐ वे इस प्रकार की अशुद्धियाँ करतें हैं ।

2) मात्राओं का अपूर्ण ज्ञान–

हिन्दी भा ा की एक सबसे बडी कमी यह है कि इसमें मात्राओं का नियम पूर्ण से वैज्ञानिक नहीं है।उदाहरण के लिऐ 'विज्ञान' शब्द में 'इ' स्वर की मात्रा (ि) का प्रयोग तो 'व' से पहले हुआ है परन्तु उसका उच्चारण 'व' के बाद होता है; इसी प्रकार 'उ' या 'ऊ' की मात्राऐं सभी व्यजंनों के

साथ समान रूप से नहीं लगाई जाती। 'र' शब्द के साथ 'उ' या 'ऊ' की मात्रा मध्य में लगाई जाती हैं इन मात्राओं के अधूरे ज्ञान की वजह से शब्दों के साथ मात्राऐं गलत लगा देते हैं।

3) अशुद्ध उच्चारण–

हिन्दी भा ा एक वैज्ञानिक भा ा है। इसमें शब्दों का जैसा उच्चारण किया जाता है वैसे ही लिखा जाता है। अब चूंकि अधिकांश छात्रों का उच्चारण ही अशुद्ध होता है। इसीलिऐ वे लिखते समय भी त्रुटियाँ करतें हैं। उदारहण के लिऐ– अधिकांशतः 'बहिन' के स्थान पर 'बहन' शब्द का उच्चारण किया जाता है और इसी रूप में लिखा जाता है फलतः वर्तनी में त्रुटि आ सकती है।

4) व्याकरण का अधूरा ज्ञान–

यदि छात्र को व्याकरण संबंधी नियमों का पुरा ज्ञान न कराया जाये तो वह शब्द–रचना, अक्षर–विन्यास संबंधी त्रुटियाँ करेगा। उदाहरण के लिऐ – यदि छात्र को व्याकरणिक नियम न बताया जाये तो छात्र ईकरांत या उकरांत संज्ञाओं का गलत प्रयोग करने लगते है। ओर जिसकी वजह से वर्तनी में त्रुटि आ जाती है।

5) शिक्षक–अयोग्यता

प्रायः छात्र अपने शिक्षक का अनुकरण करतें है। यदि अध्यापक ही संयोगवश या अयोग्यता के कारण अशुद्ध शब्द लिख देता है तो प्रायः छात्र उसी का अनुकरण करते है इस प्रकार अक्षर–विन्यास अशुद्ध हो जाता है।

1.6 अध्ययन की अवश्यकता–

भाषा हमारे विचारों को आदान प्रदान करने का साधन है, लेकिन प्रतिदिन छात्रों की भाषा प्रभावहीन होती जा रहीं है और इनमें हिन्दी भाषा का स्तर निंरतर गिरता जा रहा है। हिन्दी की प्रगति, प्रचार व प्रसार के प्रयास किए जा रहे है। यहीं कारण है कि आज प्रत्येक व्यक्ति हिन्दी भा षा की ओर से अपना मुख मोड़ रहा हैं। और आज के समय में विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा का स्तर निंरतर गिरता जा रहा है। इसका प्रमुख कारण अंग्रेजी भाषा का प्रचार एवं प्रसार हैं। आजकल बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक प्रत्येक व्यक्ति हिन्दी भाषा को छोड़कर अंग्रेजी भाषा को अत्यधिक महत्व देने लगे हैं। आजकल के अभिभावक भी अपने बच्चों को हिन्दी भाषा की बजाए अंग्रेजी भाषा को पढ़ाने में तथा उसे घरेलू रूप से मौखिक रूप देने में अत्यधिक रूचि देने लगे है। आज के समय में प्रत्येक व्यक्ति हिन्दी भाषा को बोलने में शर्म महसूस करने लगा है। लेकिन अंग्रेजी भाषा को बोलने में गर्व महसूस करता हैं। यही कारण है कि आजकल छात्र भी हिन्दी के प्रति रूचि नहीं रखते। सरकार ने कई विभागों के कार्यालयों को लिखित रूप से आदेश दिये हैं कि सभी कार्य हिन्दी में किये जाये परन्तु व्यवहारिक रूप से अभी भी कार्य अंग्रेजी भाषा में ही किये जा रहे है। यही कारण है कि आज प्रत्येक व्यक्ति हिन्दी भाषा की ओर से अपना मुख मोड़ रहा हैं। भाषा की शुद्धता सभी के लिए आवश्यक हैं, क्योंकि अशुद्ध भाषा के प्रयोग के कारण सम्प्रेषण में बाधा पड़ती है। अतः हिन्दी भाषा में रूचि उत्पन्न करने के लिए शिक्षक को हिन्दी भाषा का महत्व बताते हुए उसका अध्यापन करवाना चाहिए, जिससे विद्यार्थी हिन्दी भाषा में रूचि लें तथा त्रुटियों को कम कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अरूण, अवधेश्वर ;1973), *हिन्दी भाङ्का का स्वरूप एवं विकास, बिहार हिन्दी अकादमी ।*
2. कौल, लोकेश, ;2000), *शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, 576, अंसारी रोड़, जंगपुरा, नई दिल्ली विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा.लि. ।*
3. खर्ब, प्रतिभा, नायक, सुरेच ;2010), *हिन्दी भाङ्का चिक्षण, पटियाला पब्लिकेचन्ज ।*
4. गोस्वामी, कृष्ण कुमार ;1993), *व्यावहारिक हिन्दी और रचना, पटना, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ।*
5. चौधरी, अनन्त ;1973), *नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी, पटना, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।*
6. पाण्डेय, डॉ. रामचकल ;2007–2008), *हिन्दी चिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेचन्ज*
7. परम हंस, निगमानन्द ;1967), *राष्ट्र भाषा का शुद्ध रूप, वाराणासी; भवन प्रकाशन।*
8. बुच, एम. बी. ;1988–92), *फिफथ सर्वे ऑफ एज्युकेशनल रिसर्च, नई दिल्ली एन.सी.ई.आर.टी. ।*
9. मंगल, उमा ;1998), *हिन्दी चिक्षण, नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो ।*
10. महता, डी.डी.;2008–2009), *हिन्दी चिक्षण, भिवानी, लक्ष्मी बुक डिपो।*
11. योगेन्द्रजीत, भाई ;1972), *हिन्दी भाङ्का चिक्षण, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर ।*
12. लाल रमन, बिहारी;1976), *हिन्दी शिक्षण, मेरठ, रस्तोगी पब्लिकेचन, ।*
13. सूद, विजय 91996), *हिन्दी चिक्षण विधियां, टंडन पब्लिकेचन्ज ।*
14. सिन्हा, एच. सी. ;1979), *शैक्षिक अनुसंधान, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाऊस ।*
15. सिंह, कर्ण ;1997), *भाषा विज्ञान, रतिराम शास्त्री, मेरठ–2, साहित्य भण्डार ।*
16. सत्यार्थी, कमल ;1998), *सरस्वती मानक हिन्दी व्याकरण रचना, नई दिल्ली, लक्ष्मी पब्लिकेचन हाऊस ।*
17. त्रिपाठी, मधुसूदन ;2007), *शिक्षा अनुसंधान, 4398/5, अंसारी रोड़ दरियागंज, नई दिल्ली, ओमेगा पब्लिकेशन्स ।*